Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP-POLICE

सब-इंस्पेक्टर

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

NON - TECHNICAL

भाग – 1

हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

MP – SUB INSPECTOR

S.N.	Content हिन्दी	P.N.
1.	भाषा	1
2.	ध्वनि	3
3.	हिन्दी साहित्य	6
4.	मध्य प्रदेश की प्रमुख बोलिया	14
5.	संज्ञा	16
6.	सर्वनाम	18
7.	विशेषण	19
8.	क्रिया	20
9.	काल	27
10.	लिंग	29
11.	वचन	34
12.	वाच्य	35
13.	कारक	37
14.	विराम चिह्न	40
15.	अव्यय/अविकारी शब्द	44
16.	तत्सम – तद्भव	48
17.	उपसर्ग	50
18.	प्रत्यय	60
19.	संधि	68
20.	समास	84
21.	विलोम शब्द	90
22.	शब्द युग्म	
23.	वाक्य रचना	96

24.	पर्यायवाची	
25.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	
26.	वर्तनी शुद्धि	**100**
27.	वाक्य शुद्धि	**108**
28.	पल्लवन या विस्तारण	**114**
29.	संक्षेपण	**116**
30.	मुहावरे	
31.	लोकाक्तिया	
32.	रस	**118**
33.	छंद	**120**
34.	अलंकार	**128**
35.	पत्र – पत्रिकाएँ	**133**
36.	रचना एवं रचनाकार	**139**
37.	ज्ञानपीठ पुरस्कार	**147**
38.	पारिभाषिक शब्दावली	
39.	अपठित गद्यांश	**152**

अंग्रेजी

1.	**Parts of Speech**	
	• Noun	160
	• Pronoun	166
	• Adjective	171
	• Verb	176
	• Adverb	182
	• Preposition	189
	• Conjunction	206

2.	Time & Tense	212
3.	Article	217
4.	Conditional Sentence	226
5.	Subject – Verb Agreement	229
6.	Voice	233
7.	Narration	237
8.	Comprehension Passage	245

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

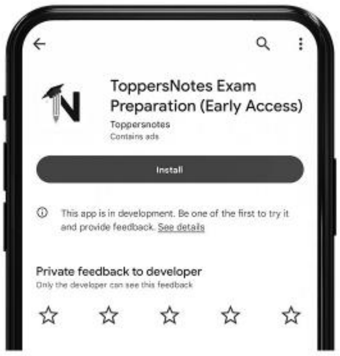

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।

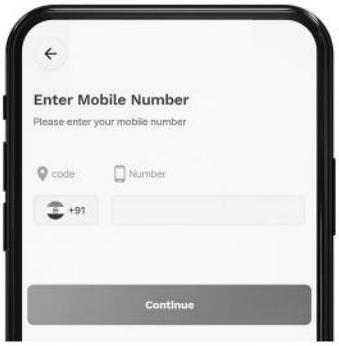

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें।

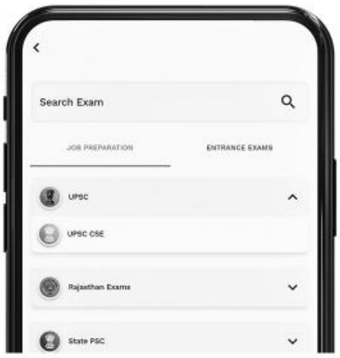

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें।

सर्च बटन पर क्लिक करें।

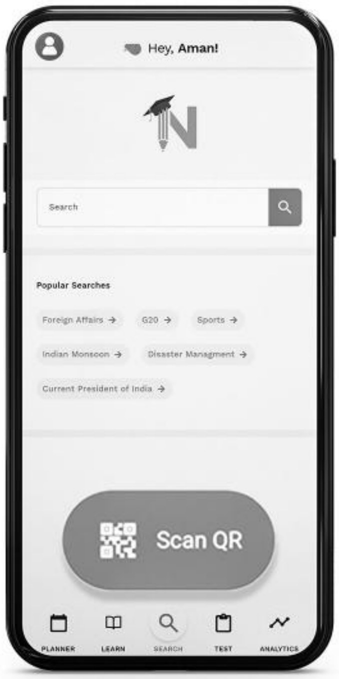

SCAN QR पर क्लिक करें।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें।

भाषा

''भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य बोलकर, लिखकर या संकेत पर परस्पर अपना विचार सरलता, स्पष्टता, निश्चितता तथा पूर्णता के साथ प्रकट करता है ।

बोली

''बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है; किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलनेवाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलनेवालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती ।''

भाषा का क्षेत्र व्यापक हुआ करता है । इसे सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, व्यापारिक आदि मान्यताएँ प्राप्त होती हैं; जबकि बोली को मात्र सामाजिक मान्यता ही मिल पाती है । भाषा का अपना गठित व्याकरण हुआ करता है; परन्तु बोली का कोई व्याकरण नहीं होता । हाँ, बोली ही भाषा को नये-नये बिम्ब, प्रतीकात्मक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि समर्पित करती है । जब कोई बोली विकास करते-करते उक्त सभी मान्यताएँ प्राप्त कर लेती है, तब वह वोली न रहकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। जैसे-खडी बोली हिन्दी जो पहले (द्विवेदी-युग से पूर्व) मात्र प्रांतीय भाषा या बोली मात्र थी वह आज भाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है ।

एक बोली जब मानक भाषा बनती है और प्रतिनिधि हो जाती है तो आस-पास की बोलियों पर उसका भारी प्रभाव पडता है । आज की खडी बोली ने ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि सभी को प्रभावित किया है । हाँ, यह भी देखा जाता है कि कभी-कभी मानक भाषा कुछ बोलियों को बिल्कुल समाप्त भी कर देती है । एक बात और है, मानक भाषा पर स्थानीय बोलियों का प्रभाव ही देखा जाता है ।

एक उदाहरण द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है-
बिहार राज्य के बेगूसराय खगडिया, समस्तीपुर आदि जिलों में प्रायः ऐसा बोला जाता है-

हम कैह देंगे । हम नै करेंगे आदि ।

भोजपुर क्षेत्र में : हमें लौक रहा है (दिखाई पड रहा है) । हम काम किये (हमने काम किया)

पंजाब प्रान्त का असर : हमने जाना है (हमको जाना है) ।

दिल्ली-आगरा क्षेत्र मे : वह कहवे था/मैं जाऊँ । मेरे को जाना है ।

कानपुर आदि क्षेत्रों में : वह गया हैगा ।

एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ हो सकती हैं, जबकि एक बोली में कई भाषाएँ नहीं होतीं ।

बोली बोलनेवाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली में बातें करते हैं; किन्तु बाहरी लोगों से भाषा का ही प्रयोग करते हैं ।

ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 6 भाषा-परिवार, 179 भाषाएँ और 544 बोलियों हैं-

(क) भारोपीय परिवार : उत्तरी भारत में बोली जानेवाली भाषाएँ ।

(ख) द्रविड परिवार : तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम ।

(ग) आस्ट्रिक परिवार : संताली, मुंडारी, हो, सवेरा, खडिया, कोर्क, भूमिज, गदवा, पलौंक, वा, खासी, मोनख्मे, निकोबारी ।

(घ) तिव्वती चीनी : लुशेइ, मेइथेइ, मारो, मिश्मी, अबोर-मिरी, अक ।

(ड) अवर्गीकृत : बुरूशास्की, अंडमानी भर

(च) करेन तथा मन : बर्मा की भाषा (जो अब स्वतंत्र है)

हिन्दी भाषा

बहुत सारे विद्वानों का मत है कि हिन्दी भाषा संस्कृत से निष्पन्न है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है । हिन्दी की उत्पत्ति प्राकृत से । प्राकृत भाषा अपने पहले की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है । स्पष्ट है कि हमारे आदिम आर्यों की भाषा पुरानी संस्कृत थी । उनके नमूने ऋग्वेद में दिखते हैं । उसका विकास होते-होते कई प्रकार की प्राकृत भाषाएँ पैदा हुई । हमारी विशुद्ध संस्कृत किसी पुरानी प्राकृत से ही परिमार्जित हुई । प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रंशों का जन्म हुआ और उनसे वर्तमान संस्कृतोत्पन्न भाषाओं की । हमारी वर्तमान हिन्दी, अर्द्धगामी और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है ।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य किसी एक विभाग और उसके साहित्य के विकसित रूप नहीं हैं; वे अनेक विभाषाओं और उनके साहित्यों की समष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक बहुत बडे क्षेत्र-जिसे चिरकाल से मध्यदेश कहा जाता रहा है-की अनेक बोलियों के ताने-बाने से बुनी यही एक ऐसी आधुनिक भाषा है, जिसने अनजाने और

अनौपचारिक रीति से देश की ऐसी व्यापक भाषा बनने का प्रयास किया था, जैसी संस्कृत रहती चली आई थी; किन्तु जिसे किसी नवीन भाषा के लिए अपना स्थान तो रिक्त करना ही था ।

वर्तमान हिन्दी भाषा का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक हो चला है । इसे निम्नलिखित विभागों में बाँटा गया है-

(क) बिहारी भाषा : बिहारी भाषा बँगला भाषा से अधिक संबंध रखती है । यह पूर्वी उपशाखा के अंतर्गत है और बँगला, उड़िया और आसामी की बहन लगती है । इसके अंतर्गत निम्न बोलियाँ हैं- मैथिली, मगही, भोजपुरी, पूर्वी आदि । मैथिली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ठाकुर और भोजपुरी के बहुत बड़े प्रचारक भिखारी ठाकुर हुए ।

(ख) पूर्वी हिन्दी : अर्द्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी निकली है । गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस-जैसे महाकाव्यों की रचना पूर्वी हिन्दी में ही की । दूसरी तीन बोलियाँ हैं- अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी । मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ इसी भाषा में लिखी हैं ।

(ग) पश्चिमी हिन्दी : पूर्वी हिन्दी तो बाहरी और भीतरी दोनों शाखाओं की भाषाओं के मेल से बनी हैं; परन्तु पश्चिमी हिन्दी का संबंध भीतरी शाखा से है ।

यह राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी से संबंध रखती है । इस भाषा के कई भेद हैं--हिन्दुस्तानी, ब्रज, कन्नौजी, बुँदेली, बाँगरू और दक्षिणी ।

गंगा-यमुना के बीच मध्यवर्ती प्रान्त में और उसके दक्षिण दिल्ली से इटावे तक ब्रजभाषा बोली जाती है । गुड़गाँव और भरतपुर, करौली और ग्वालियर तक ब्रजभाषी हैं । इस भाषा के कवियों में सूरदास और बिहारीलाल ज्यादा चर्चित हुए ।

कन्नौजी, ब्रजभाषा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है । इटावा से इलाहाबाद तक इसके बोलनेवाले हैं । अवध के हरदोई और उन्नाव में यही भाषा बोली जाती है ।

बुँदेली बुंदेलखंड की बोली है । झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर के पूर्वी प्रान्त, मध्यप्रदेश के दमोह छत्तीसगढ़ के रायपुर, सिउनी, नरसिंहपुर आदि स्थानों की बोली बुँदेली है । छिंदवाड़ा और हुशंगाबाद के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रचार है ।

हिसार, झींद, रोहतक, करनाल आदि जिलों में बाँगरू भाषा बोली जाती है। दिल्ली के आसपास की भी यही भाषा है ।

दक्षिणी हिन्दी बोलनेवाले मुंबई, बरौदा,बरार, मध्य प्रदेश, कोचीन, कुग, हैदराबाद, चेन्नई, माइसोर और ट्रावनकोर तक फैले हैं । इन क्षेत्रों के लोग मुझे या मुझको की जगह 'मेरे को' बोलते हैं ।

भारत की भाषाओं की सूची		
क्र. सं.	भाषाएँ	बोलनेवालों का अनुपात % में
1	संस्कृत	0.01
2	मैथिली	0.9
3	मराठी	7.5
4	नेपाली	0.3
5	पंजाबी	2.8
6	संथाली	0.6
7	मलयालम	3.6
8	मणिपुरी	0.2
9	असमिया	1.6
10	ओड़िया	3.4
11	गुजराती	4.9
12	कश्मीरी	0.5
13	कन्नड	3.9
14	डोगरी	0.2
15	कोंकणी	0.2
16	बांग्ला	8.3
17	तमिल	6.3
18	सिंधी	0.3
19	उर्दू	5.2
20	बोडो	0.1
21	तेलुगू	7.9
22	हिन्दी	40.2

देवनागरी लिपि

'हिन्दी' और 'संस्कृत' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। 'देवनागरी लिपी का विकास 'ब्राह्मी लिपी' से हुआ, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ट के एक शिलालेख में मिलता है । 8वीं एवं 9वीं सदी में क्रमशः राष्ट्रकूट नरेशों बड़ौदा के ध्रुवराज ने अपने देशों में इसका प्रयोग किया था । महाराष्ट्र में इसे 'बालबोध' के नाम से संबोधित किया गया ।

देवनागरी लिपि पर तीन भाषाओं का बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा ।

(i) फारसी प्रभाव : पहले देवनागरी लिपि में जिह्वामूलीय ध्वनियों को अंकित करने के चिह्न नहीं थे, जो बाद में फारसी से प्रभावित होकर विकसित हुए- क, ख, ग, ज, फ ।

(ii) बांग्ला-प्रभाव : गोल-गोल लिखने की परम्परा बांग्ला लिपि के प्रभाव के कारण शुरू हुई ।

(iii) रोमन-प्रभाव : इससे प्रभावित हो विभिन्न विराम-चिह्नों, जैसे--अल्प विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नसूचक चिह्न, विस्मयसूचक चिह्न, उद्धरण चिह्न एवं पूर्ण विराम में 'खड़ी पाई' की जगह 'बिन्दु' (च्वपदज) का प्रयोग होने लगा ।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :

- इसके ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक हैं ।
- प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण हैं।
- वर्गों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य हैं ।
- छपाई एवं लिखाई दोनों समान हैं ।
- ह्रस्व एवं दीर्घ में स्वर बँटे हैं ।
- निश्चित मात्राएँ हैं ।
- उच्चारण एवं प्रयोग में समानता है ।
- प्रत्येक के ढिए अलग लिपि चिह्न हैं ।

ध्वनि

'ध्वनि' का अर्थ है-वर्ण या भाषा की लघुतम इकाई । इसका खंड या टुकड़ा नहीं हो सकता ।
अर्थात 'वर्ण वह मूल ध्वनि है, जिसका खंड नहीं होता ।''
वर्णों या ध्वनियों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं । हिन्दी वर्णमाला में कुल 46 वर्ण हैं-

1. स्वर वर्ण (11)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ और औ ।

स्वर वर्णों का उच्चरण बिना रुके लगातार होता है । ऊपर के किसी वर्ण का उच्चारण लगातार किया जा सकता है सिर्फ 'ऋ' वर्ण को छोड़कर; क्योंकि ऋ का लगातार उच्चारण करने पर 'इ' स्वर आ जाता है ।
उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर स्वर वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है-
(a) मूल या ह्रस्व स्वर- अ, इ, उ और ऋ
(b) दीर्घ स्वर-आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, और औ
ए : अ/आ + इ/ई (गुण होने के कारण)
ओ : अ/आ + उ/ऊ (गुण होने के कारण)
ऐ : अ/आ + ए (वृद्धि होने के कारण)
औ : अ/आ + ओ (वृद्धि होने के कारण)
जाति के अनुसार स्वर वर्णों को दो भागों में रखा गया है-
(a) सजातीय/सवर्ण स्वर : इसमें सिर्फ मात्रा का अंतर होता है । ये ह्रस्व और दीर्घ के जोड़ेवाले होते हैं। जैसे-
अ-आ इ-ई उ-ऊ
(b) विजातीय/असवर्ण स्वर : ये दो भिन्न उच्चारण स्थानवाले होते हैं । जैसे-
अ-इ उ-ओ आदि ।
स्वरों के प्रतिनिधि रूप, जिनसे व्यंजन वर्णों का उच्चारण हो पाता है 'मात्रा' कहते हैं ।

2. व्यंजन वर्ण (33)

व्यंजन वर्णों का उच्चारण रुक-रूक कर होता है । ये वर्ण आधी मात्रावाले होते हैं, इसलिए बिना स्वर के इनका उच्चारण असंभव है ।
व्यंजन वर्णो को तीन भागों में बाँटा गया है-
(क) स्पर्श व्यंजन : ये वर्ण विभिन्न वागिन्द्रियों (कंठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ आदि) से स्पर्श क कारण उच्चरित होते हैं । इसके अंतर्गत निम्नलिखित वर्ण आते हैं-
कवर्ग : क् ख् ग् घ् ङ्

चवर्ग :	च्	छ्	ज्	झ्	ञ	
टवर्ग :	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण् (ड़, ढ़)	
तवर्ग :		त्	थ्	द्	ध्	न्
पवर्ग :		प्	फ्	ब्	भ्	म्

(ख) अन्तःस्थ व्यंजन : ये वर्ण स्पर्श एवं ऊष्म के बीच आते हैं । इसके अंतर्गत य, र, ल् और व्- ये चार ध्वनियाँ आती हैं ।

(ग) ऊष्म व्यंजन : ये ऐसे वर्ण हैं, जिनके उच्चारण में विशेष घर्षण के कारण मुख से गर्म हवा निकलती है । इसके अंतर्गत श, ष, स् और ह् आते हैं ।

(iii) अयोगवाह वर्ण : 'अनुस्वार' और 'विसर्ग' अयोगवाह वर्ण हैं । ये स्वर एवं व्यंजन दोनों द्वारा ढोए जाते हैं । जैसे-

अं-अः (स्वर द्वारा) कं-कः (व्यंजन द्वारा)

उच्चारण में वायु-प्रक्षेप की दृष्टि से या काकल के आधार पर वर्णों के दो प्रकार हैं-

(क) अल्पप्राण : ऐसे वर्ण, जिनके उच्चारण में वायु की सामान्य मात्रा रहती है और हकार-जैसी ध्वनि बहुत ही कम होती है । इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्ण, वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण, अनुस्वार और अन्तःस्थ व्यंजन आते हैं । इसकी कुल संख्या 11 + 15 + 1 + 4 =31 है ।

(ख) महाप्राण : महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण में वायु की पर्याप्त मात्रा होती है, जिसके कारण हकार-जैसी ध्वनि स्पष्ट दिखती है । इसके अंतर्गत सभी वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन, विसर्ग और ऊष्म व्यंजन आते हैं । इसकी कुल संख्या 10 + 1 + 4 = 15 है ।

स्वर-तंत्री के आधार पर वर्णो को दो अन्य भागों में भी बाँटा गया है ।

(क) घोष या सघोष वर्ण : घोष ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों आपस में मिल जाती हैं और वायु धक्का देते बाहर निकलती है । फलतः झंकृति पैदा होती है । इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण, अन्तःस्थ और ह आते है ।

(ख) अघोष वर्णों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियाँ परस्पर नहीं मिलती । फलतः वायु, आसानी से निकल जाती हे । इस वर्ग में वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण और तीनों स (श, ष, स) आते है ।

आभ्यन्तर प्रयल के आधार पर स्वरों को चार और व्यजनों को आठ वर्गों में रखा गया है-

	प्रकार	वर्ण
स्वर	संवृत स्वर	इ, ई, उ और ऊ
	अर्द्धसंवृत स्वर	ए, ऐ, ओ और औ
	अर्द्धविवृत स्वर	अ
	विवृतस्वर	आ

	प्रकार	वर्ण
व्यंजन	स्पर्श व्यंजन	क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प. फ, व, भ
	स्पर्श संघर्षी व्यंजन	न, छ, ज और झ
	संघर्षी व्यंजन	म, श, ह, ख, ग, ज, फ और व
	अनुनासिक	छ, ज, ण, न, म और अनुस्वार
	पार्श्विक	ल
	लुंठित/प्रकंपी	र
	उत्क्षिप्त	ड, ढ
	अर्द्ध स्वर	य और व

उच्चारण-स्थान की दृष्टि से वर्णों को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है-

प्रकार	वर्ण
1. कंठ्य वर्ण	अ, आ, कवर्ग, विसर्ग और ह
2. तालव्य वर्ण	इ, ई, चवर्ग, य और श
3, मूर्द्धन्य वर्ण	ऋ, टवर्ग, र और ष
4. दंत्य वर्ण	तवर्ग और स
5. वर्त्स्य वर्ण	ल
6. ओष्ठ्य वर्ण	उ, ऊ और पवर्ग
7. कष्ठ-तालव्य वर्ण	ए और ऐ
8. कण्ठोष्ठ्य वर्ण	ओ और औ
9. दन्तोष्ठ्य वर्ण	व
10 नासिक्य वर्ण	पंचमाक्षर और अनुस्वार
11. अलिजिह्व वर्ण	क, ख, ग, ज और फ

उच्चारण करने की स्थिति में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि क्रमशः आती रहती है और ध्वनियों के मध्य आवश्कतानुसार अल्पकालिक विराम की अवस्था आती है । इसी को 'संगम' कहा जाता है । इस एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि पर जाने के दो तरीके होते हैं-

(क) कभी वक्ता सीधे पहली से दूसरी ध्वनि पर चला जाता है । जैसे -

तुम् (तुम्हारा के उच्चारण में)

(ख) कभी वक्ता थोडा ज्यादा समय लता है । जैसे-

तुम हारे (तुम्हारे के उच्चारण में)

संगम के लिए किसी विराम चिन्ह की आवश्यकता नहीं पडती है । इसके प्रयोग से शब्दों या वाक्यों के अर्थो में भिन्नता आ सकती है । जैसे-

नफीस - सुन्दर (एक साथ उच्चारित होने पर)

न फीस-निःशुल्क (अलग-अलग उच्चारित होने पर)

सोना- स्वर्ण सो ना- मत सो

वाक्यों में प्रयोग देखें-

वह बैलगाडी खींचता है । (कोई व्यक्ति)

वह बैल गाडी खींचता है । (बैल के बारे में)

उच्चारण के समय जब स्वरों पर अधिक बल पडता है तब उसे बलाघात या स्वराघात कहा जाता है ।

यह तीन तरह का होता है-

1. वर्ण-बलाघात : इससे अर्थ में अन्तर आ जाता है। जैसे-पिट-पीट, लुट-लूट

इन उदाहरणों में स्पष्ट देखा जा रहा है कि 'पि' और 'लु' पर बलाघात के कारण अर्थो अंतर आ गया है ।

2. शब्द-बलाघात : इससे वाक्यों के अर्थो में स्पष्टता आती है ।

3. वाक्य-बलाघातः इसमें वाक्य के भिन्न-भिन्न पदों पर बलाघात के कारण भावों में अंतर देखा जाता है ।

ध्वनियों की उस छोटी से छोटी इकाई को 'अक्षर' कह जाता है, जिनका उच्चारण एक झटके में होता है । जैसे-

आ- एक ध्वनिवाला अक्षर

खा- दो ध्वनियों वाला अक्षर

बैठ- तीन ध्वनियों वाला अक्षर

अक्षर दो प्रकार के होते हैं-

1. बद्धाक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि हलंतयुक्त हो । जैसे- श्रीमान्, जगत्, परिषद् आदि ।

2. मुक्ताक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि स्वर हो । जैसे- खा, ला, पी, जा, जगत आदि ।

जब कोई व्यंजन वर्ण स्वयं से ही संयोग करें, तो वह 'युग्मक ध्वनि' और जब किसी अन्य व्यंजन वर्ण से संयोग करे तो वह 'वयंजन गुच्छ कहलाता है ।

शॉर्ट ट्रिक

वर्णों के उच्चारण स्थान के लिए इसे याद कर लें

'अकह विसर्ग' कण्ठराम । 'इचयश' भी हैं तालु राम ॥

'ऋटष' से जानो मूर्द्धा जी । 'लृतस' पुकारो दन्त जी ॥

'उप' आते हैं ओष्ठ में । केवल 'व' दन्तोष्ठ में ॥

'ए-ऐ' कहे कण्ठ-तालु । 'ओ-औ' कहे कण्ठोष्ठ में ॥

नासिका से पंचमाक्षर । जिह्वा रखो प्रकोष्ठ में ॥

हिन्दी साहित्य

साहित्य की निश्चित (संक्षिप्त) परिभाषा देना संभव नहीं है। क्योंकि परिभाषा की निर्माण वस्तुनिष्ठता के आधार पर होता है। जबकि साहित्य की मूल प्रकृति आत्मनिष्ठ है। पुराने समय में इसकी परिभाषा देना का एक प्रयास आचार्य कुंतक ने किया उन्होंने आचार्य भामक द्वारा की गई परिभाषा 'शब्दार्थौं सहित काव्य' की व्याख्या करते हुए कहा कि वाड्मय (वाणी/भाषा) तीन प्रकार का होता है।

1. वार्ता –
   वह वाड्मय है। जिसमें अर्थ का महत्व शब्द से अधिक होता है। लौकिक जीवन की बातचीत और लोकसाहित्य में ऐसा ही दिखाता है। मुहावरों की भाषा जैसे
   1. नाकों चने चवाना
   2. दांत खट्टे करना
   इत्यादि अर्थ की प्रधानता पर आधारित है।

2. शास्त्र –
   वाड्मय का वह हिस्सा जिसमें शब्द का महत्व अर्थ से बहुत अधिक होता है इसमें शब्द का जरा सा परिवर्तन अर्थ को क्षति पहुंचता है। वैज्ञानिक विषयों का वाड्मय इस का उदाहरण है।

   साहित्य /काव्य

   यह इन दोनों से अलग इस अर्थ में है कि यहाँ शब्द और अर्थ दोनों में से कुछ भी अत्यंत गौण नहीं होता । इसमें शब्द और अर्थ दोनों ही महत्वपूर्ण होते है। तथा उनमें महत्व हेतु परस्पर प्रतिस्पर्धा होती है।

   आधुनिक काल में साहित्य शब्द का अर्थ बदलने लगा है । अब साहित्य सिर्फ कला या विकास की वस्तु नहीं रहा बल्कि समाज के यथार्थ से जुडने लगा। यहां साहित्य का अर्थ समाज का व्यापक हित है इस शब्द के अनुसार साहित्य वही रचना है जो समाज के व्यापक हित को ध्यान में रखकर की गई है।

   इन दोनों परिभाषाओं में साहित्य की बताई हुई विशेषताओं में एक और विशेषता है सौंदर्य और रमणिमता । साहित्यिक रचना सौंदर्य से उक्त होती है। जो हमारे को प्रभावित करती है।

   इन सभी लक्षणों के आधार पर साहित्य की परिभाषा देने का प्रयास किया जा सकता है ' हम कह सकते है। कि साहित्य वाड्मय का वह रूप है जिसमें सौंदर्य के साथ समाज के व्यापक हित की भावना विद्यमान होती है तथा जिसमें शब्द और अर्थ दोनों के महत्व में प्रतिस्पर्धा लगी रहती है।

   काव्य – (अ) प्रबंध काव्य
   1. महाकाव्य पूर्व सम्बन्ध
   2. खण्ड काव्य

   (ब) मुक्तक काव्य

1. प्रबंध काव्य – महाकाव्य के नियम या पारम्परिक नियम
   1. महाकाव्य का नायक धीरोदत्त दात होना चाहिए ।
   2. चारों पुरूषार्थों का वर्णन होना चाहिए ।
      धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
   3. छन्दों की वैविध्य /विविधता होनी चाहिए। एक सर्ग में एक ही छनद होना चाहिए । उसी सर्ग का अंतिम छनद अलग होना चाहिए ।
   4. रचना की शुरूआत में मंगलाचरण होना चाहिए ।
   5. सज्जन की प्रशंसा और दुर्जन की निन्दा होना चाहिए ।
   6. समाज या संस्कृति का सम्पूर्ण चित्रण होना चाहिए।
   7. रचना में आठ या अधिक सर्ग होना चाहिए ।
   8. पढ़ने वाले (पाठक) नैतिक रूप से उत्कर्ष होना चाहिए।

महाकाव्य के आधुनिक नियमः–

डॉ0 नगेन्द्र के नियम अनुसार–
1. उदात्त या महत्व पूर्ण कथानक होना चाहिए ।
2. उदात्त भाव होना चाहिए ।
3. उदात्त चरित्र होना चाहिए ।
4. उदात्त कार्य होना चाहिए (अंतिम भाग) में गरिमा होनी चाहिए ।
5. उदात्त शैली होना चाहिए (तरीका होना)

महाकाव्य के तत्व – 4 प्रकार के महाकाव्य होते है–
1. भाव प्रधान – कामयानी (जयशंकर प्रसाद)
2. चरित्र प्रधान – रामचरित मानस (तुलसी दास)
3. वर्णन प्रधान – रामचंद्रिका (केशव दास)
   सबसे अच्छे महाकाव्य चरित्र प्रधान महाकाव्य माने जाते है–
4. घटना प्रधान – पृथ्वीराजरासो

खण्डकाव्य

खण्डकाव्य

(1) एक पक्ष को लेकर चलता है।
जैसे – व्यक्ति, घटना, स्थिति

यह व्यक्ति या एक पथ पर ही केन्द्रित होते है न कि समाज पर । ऐसी स्थिति में कविता के लिए सिर्फ भावों का है क्षेत्र बचा । द्विवेदी युग के कवि इस चुनौती को नहीं समझ सके इसलिए कविताओं में विचारों और वर्णनों की प्रस्तुति करके गद्य से लोहा लेते रहे । इस प्रक्रिया में कविता को लाभ तो नहीं हुआ बल्कि उनकी

कविताऐं अपने स्वरूप में गद्यात्मक तथा इतिवृतात्मक हो गई।

छायावाद के कवियों ने बदलते हुए समय की नब्ज को पहचाना कविता के स्वरूप में संशोधन किया और उन्होंने मुख्यतः गीत और प्रगति लिखे तो तीप्त भावनाओं के बाहर थे इसके अतिरिक्त उन्होंने पारम्परिक प्रबंध काव्यों के इतिवृत्तामका प्रसंगों को कम करते हुए भावात्मक प्रसंगों को बनाये रखे हुए ऐसी कविताऐं रची जो आकार में पुराने प्रबंधों काव्यों से आकार में छोटी थी । किन्तु मुक्तक कविताओं से लंबी थी । कोई उपयुक्त नाम न मिलने के कारण उस समय इन्हें लंबी कविता कह दिया गया और यही नाम आज तक प्रचलित है।

नोटः-

आत्मनिष्ठ/व्यक्तिनिष्ठ - स्वयं पर निर्भर

1. वस्तुनिष्ठ - वस्तु पर निर्भर और सभी के लिए समान ।
2. तथ्य - जिसे मानने के लिए सभी बाध्य हो ।
3. एक आदेश अनुसारी होता है। अर्थात् केवल एक पक्ष को लेकर चलता है।

जैसे - व्यक्ति, घटना, काल, स्थिति

इसमें छनद परिवर्तन जरूरी नहीं होता है।

जयद्रथ वध - मैथिली शरण गुप्त

भारत भारती - मैथिली शरण गुप्त

3. **गद्यकाव्यः-** ऐसा काव्य जो विस्तार पूर्ण व्यास शैली में लिखा जाता है। जिसमें गेयता नहीं होता । उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, एकाकी, गद्य की विद्या है।
4. **पद्यकाव्य** - पद्य काव्य मुख्यतः भावनाओं से प्रभावित होकर लिखा जाता है। इसमें गेयता एवं संगीतात्मकता होती है।
   ङदा,गीत,प्रगीत, पहेली, मुकरी, ढकोसला
   गद्य और पद्य काव्य की मिश्रित शैली को चंपू काव्य कहते है।
5. **मुक्तक काव्य -** मुक्तक काव्य के निम्न भेद है-

1. गीत -
   1. यह भावना की चरण तीव्रता में लिखे जाते है।
   2. इसे गाया जा सकता है।
   3. इसमें भाव ऐक्यता होती है।
   4. इसमें भाव वैयक्तिकता होती है।
   5. गीत और पद समान होते है। किन्तु पद में भक्ति भाव होता है।

2. **प्रगति -**
   1. इसमें गीत से ज्यादा भाव ऐक्यता होती है।
   2. इसमें छंग भंग हो जाता है।
   3. इसमें गेयता समाप्त हो जाती है।
   4. निराला ने सबसे ज्यादा प्रगति की रचना की।
   5. प्रगति का सर्वाधिक विकास छायावाद में हुआ।

3. **पहेली** -
   जिस कविता में प्रश्न हो तथा श्रोता उसका उत्तर दे । उसे पहली कहते है। आदिकाल में अमीर खुसरो ने तथा आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिशचंद्र ने इसका उपयोग किया ।
   उदा. एक थाल मोती से भरा सबके सिर औधा धरा ।
   चारों और वह थाल फिर मोती उसके एक ना गिरे।

4. **मुकरी** -
   जिस कविता में प्रश्न के साथ साथ उत्तर भी हो वह मुकरी कहलाती है ।सामान्यतः इसमें चार चरण होते है।
   उदा- नित घर आवत है रैन ढलै फिर जावत है। फसत अमावस गोरी के फंदा है सखी साजन न सखी चांदा ।

5. गजल -
   (गजल का अर्थ होता है) 'महिलाओं से' या 'महिलाओं की बात चीत'
   1. ये उर्दु और फारसी की परम्परा से भारत आई है।
   2. यह 1950 के बाद समाज से जुड़ने लगी ।
      गजल का पहला शेर को मतला (उगता हुआ सूर्य) कहते है जब कि अंतिम शेर को मकता (ढलता हुआ सूर्य) कहते है।
      गजल में 5-25 तक शेर होते है।

   उदा. जिसे इश्क का तीर कारी लगे, उसे जिन्दगी क्यों न भारी लगे ।
   1. शेर हमेशा विषम संख्या में ही होते है। गजल में लय और तुक को क्रमशः रीदफ और काफिजा कहते है।
   2. यदि लेखक अंतिम शेर के नीचे अपना नाम लिख देता है तो उसे तखल्लुस कहते है।

6. **नज्म**-
   यह उर्दु परम्परा की अतुकांत/छंद विहीन कविता है। जो अंतर गीत और प्रगीत में है। वही अंतर गजल और नज्म में होता है।

7. **शोक -गीति**
   शोक गीति विशेषता मृत्यु के अवसर पर लिखी जाती है।
   1. परसी परम्परा में इसे (मार्सिया) तथा अंग्रेजी में इसे "Elegy" 'एलिजी'
   2. अच्छी शोक गीति में प्रतीकात्मक भाषा होती है।

3. अंत में इसमें भावुकता आ जाती है।
4. निराला ने 'सरोज स्मृति' नाम शोक गीति लिखी है।

8. <u>नवगीत</u> –

नई कविता के समय जो गीत लिखे गये उन्हें नवगीत कहते है।

1. इसमें छायावाद के गीतों से अधिक भावात्मक तीव्रा नहीं होती है।

9. <u>सुखने</u> –

1. पान क्यों सडा घोडा क्यों अडा फेरा न था
2. समोसा न खाया जूता न पहना तला न था

काव्य

आचार्य 'विश्वनाथ के अनुसार' रस युक्त वाक्य ही काव्य है। आचार्य जगनाथ के अनुसार रमणी अर्थ के प्रतिवादक धर्म को काव्य कहते है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार उस वस्तु तथ्य की हृदय में कोई भाव जगा दे और उस वस्तु, तथ्य की मार्मिक भावना को लीन कर दे । वह काव्य है।

<u>काव्य का भेद –</u>

1. श्रव्य काव्य – श्रव्य काव्य ऐसे काव्य को कहते है जिनका आनन्द पढकर और सुनकर लिया जाता है। जैसे – महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य, कहानी, उपन्यास आदि ।
2. दृश्य काव्य – यह नाट्य विधा से संबंधित ऐसा काव्य है। जिसका आनन्द लिया जाता है। जैसे – नाटक, एकांकी, प्रहसन

<u>श्रव्य काव्य के दो भेद है</u>

1. प्रबंध काव्य
2. मुक्तक काव्य

प्रबंध काव्य के अंतर्गत महाकाव्य और खण्काव्य आता है।

आधुनिक महाकाव्य – रचनाएँ –

प्रिय प्रवास – हरिऔध साकेत – मैथिलीशरण गुप्त

कमायनी – जयशंकर प्रसाद

कुरुक्षेत्र – रामधारी सिंह दिनकर

लोकापतन – सुमित्रा नन्दन पंत

रश्मि रति – रामधारी सिंह दिनकर

गद्य काव्य (चम्पू काव्य) : गद्य काव्य गद्य, पद्य के बीच की विधा होती है। इसमें गद्य के माध्यम से किसी भाव पूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिवयक्ति होती है।

विशेषताएँ –

1. इसमें भावों की सरस अभिव्यक्ति होती है।
2. इसमें एक ही केन्द्रीय भाव की प्रधानता होती है।
3. इसमें विचारों का समावेश भावों के अनुरूप ही होता है।
4. अनुभूति की प्रधानता,प्रतिकात्मकता, काल्पनिकता, संक्षिप्ता इसकी विशेषताएँ

गद्य काव्य

रचना	रचनाकार
1. साधना, प्रवालस पगला	कृष्णदास
2. विश्वधर्म	कृष्णदास
3. साहित्य देवता	माखनलाल चतुर्वेदी

आख्यानक गीत – काव्य के अन्य रूपों में आख्यानक गीत भी प्रमुख है। जिसमें पद्य शैली में लघु आख्यानक कथा वर्णित होती है।

गेयता इसका प्रमुख गुण है।

उदा- झाँसी की रानी, लक्ष्मीबाई, चंदेरी का जौहर, महाराणा प्रताप आदि ।

हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा हिन्दी साहित्य का काल और नामकरण

1. आदिकाल (1050- 1350 ए.डी.)
2. आदिकाल नाम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने दिया।
3. इस काल को वीर गाथा नाम आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने दिया ।
4. इस काल के प्रमुख कवियों में -
   चंद्रवरदाई - पृथ्वीरासो
   अमीर खुसरो - पहली, मुकरी
   विजय सेन - रेवन्तगिरी रास
5. इस काल में डिंगल - पिंगल दो शैलियां मिलती है।
6. इस काल में नाथ और सिद्ध साहित्य भी लिखा गया ।
7. हिन्दी साहित्य का काल एवं नामांकरण - हिन्दी साहित्य इतिहास के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय
   अ. जार्ज ग्रियर्सन को दिया गया है।

इस काल के प्रमुख कवियों में चंदवरदायी व विद्यापति मैथिलकोकिल कहलाए वह उनकी मैथली में रचित पदावली है यह मुक्तक काव्य है। और पूरी पदावली भक्ति व श्रृंगार की धूप छाव है इस काल में डिंगल और पिंगल दो शैलियां मिलती है। पिंगल शैली को ब्रज भाषा में समाहित कर दिया गया है।

1. सिद्धो की संख्या 84 मानी जाती है। प्रथम सिद्ध शहर 'सरहपा' है।
2. अनुश्रुति के अनुसार 9 नाथ है नाथ साहित्य के प्रवर्तक गोरखनाथ है।
3. विद्यापति के कीर्तिलता व कीर्तिलका की रचना अवहट्ट में की ।
4. चौपाई के साथ दोहा रखने की पद्धति कडवक कहलाती है। कडवक का प्रयोग आगे चलकर भक्ति काल में हुआ ।
   जैसे - यशोधरा, जयद्रथ वध (मैथलीशरण गुप्त) इसमें छंद परिवर्तन जरूरी नहीं होता है।

आदिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचना	रचनाकार
1. संदेश शासक	अब्दुर रहमान
2. परमाल रासा	जगनिक
3. खुमाण रासो	दलवति विजय
4. सबदी	गोरखनाथ
5. दोहाकोष	सरहया

नोट- अमीर खुसरो को हिंद इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रथम प्रतिनिधि कहा जाता है।

भक्तिकाल (1350-1650)

1. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का 'स्वर्ण काल' कहा जाता है। भक्तिकाल के उदय के बारे में सबसे पहले जार्ज ग्रियर्सन ने मत व्यक्त किया वे इसे 'ईसायत की देन' मानते है।
2. तारा चंद के अनुसार भक्तिकाल अरबों की देन है।
3. भक्ति आन्दोलन का स्वरूप देश व्यापी था ।
4. भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ है।
5. निर्गुण काव्य धारा ।
   निर्गुण काव्य धारा की दो शाखाएँ है-
   1. ज्ञानाश्रयी 2. भक्ति काव्य

निग्रुर्ण की विशेषताएं -

1. लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति ।
2. निराकार ईश्वर ।
3. जाति प्रथा का विरोध व हिन्दू मुस्लिम एकता का समर्थन ।

सगुण की विशेताएं -

1. अवतारवाद में विश्वास
2. ईश्वर की लीलाओं का गायन ।
3. राम व कृष्ण भक्ति ।

भक्ति कालीन काव्य की विशेषताएं -

1. संत काव्य का सामान्य अर्थ संतो के द्वारा रचा गया काव्य है।
2. बोली के ठेठ शब्दों के प्रयोग के कारण ही हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को वाणी डिक्टेटर तानाशाही कहा गया ।
3. जायसी के यश का आधार पद्मावत है।
4. मालिक मोहम्मद जायसी, जायस के रहने वाले थे ये सिकंदर लोधी व बाबर के समकालीन थे ।
5. पद्मावत की कथा चित्तौड के शासक, रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकन्या, पद्मणी की प्रेमवाणी पर आधारित थी ।
6. ब्रजमण्डल में कई कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय सक्रीय थे इसमें वल्लभ, हरिराशी चेतन्य, राधावल्लभ, निम्बार्क, सम्प्रदाय विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
7. विट्ठलनाथ ने अष्टछाप की स्थापना की सूरदास इनमें सर्वप्रथम हो और उन्हें अष्ठछाप का जहाज कहा जाता है।
   रामभक्त कवि में कुछ नाम उल्लेखनीय है -
   1. रामानंद 2. ईश्वरदास
   3. केशवदास 4. नरहरिदास

1. सूर वात्सल्य चित्रण के लिए विश्व में अन्यतम कवि माने जाते हैं।

भक्तिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	रचना
कबीर	1. बीजक
	2. चंदायन
मुल्लादाऊद	3. रूपमंजरी
नंददास	4. परमानंद सागर
परभानंद दास	5. नरसी जी का मायरा
मीराबाई	6. सुदामाचरित्र
नरोत्तमदास	7. रसखान
रसखान	8. कविप्रिय, रसिकप्रिया
विज्ञान गीता केशवदास	9. सतसई या रहीत

दोहावली, श्रृगांर सोरठा रहीम

नोट – अष्टछाप के कवि –

1. बल्लभाचार्य के शिष्य – सूरदास, परमानंद दास, कुम्भन दास, कृष्ण दास
2. विट्‌ठलदास के शिष्य – छीतस्वामी नंददास, चतुर्भदास, गोविन्द स्वामी

इस काल के प्रमुख कवि एवं रचनाऐं :- भक्तिकाल(1350-1650)

कबीर दास – बीजक, सवद, रमैनी

मालिक मोहम्मद जायसी – पद्‌मावत सूरदास-सूरसागर, भ्रमरगीतसार तुलसीदास- रामचरि, आखिरी सलाम, अखरावट

मानस, कवितावली, कृष्ण गीतावली

1. भक्ति काल में निर्गुण और सगुण दो शाखाये थी ।
2. निर्गुण धारा में कबीर और जायसी आते है जब कि सगुण के धारा में तुलसीदास और सूरदास आते है।

कबीर दास	सन्त काव्य धारा -ज्ञानमर्गी
जायसी	प्रेमश्रयी या सूफी काव्यधारा
कृष्ण काव्य धारा	सूरदास
तुलसी दास	रामकाव्य धारा

3. रीतिकाल (1650-1850)
    1. आचार्य शुक्ल ने इस काल का नाम रीतिकाल दिया तथा आचार्य विश्वनाथ प्रसादमिश्र ने इसे श्रृंगार काल कहा ।
    2. इस काल के प्रमुख कवियों में केशवदास है। इन्हें रीतिकाल का प्रवर्तक माना जाता है।
    3. इन्हें कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।
    4. इनकी प्रमुख रचनाओं में रामचंदिका विज्ञान गीता, नख शिख वर्णन आदि है।

नोट :-

बिहारी लाल – प्रमुख रचनाऐं – विहारी सतसई

5. इनके बारे में 'जॉर्ज' 'ग्रियसर्न' ने कहा है कि 'मुझे पूरे यूरोप में बिहारी जैसा कवि नहीं दिखाई देता ।
   घनान्द – सुजान चरित्र
6. आचार्य कवि परम्परा या लक्षण ग्रंथ परम्परा इस काल की प्रमुख विशेषता है।
7. गागर में सागर भरने का काम कविवर बिहारी लाल ने किया है।
8. इस काल की रीति इतर शाखा में नीति कथन कहे गये है।
   नोट :-
   धनान्द को प्रेम पीर का कवि कहा जाता है।
9. समग्रतः रीतिकालीन काव्य जनकाव्य नहीं है। बल्कि दरबारी संस्कृति काव्य है। इसमें श्रृंगार और शब्द सज्जा पर जोर रहा ।
10. रीतिकाल में कवि, जोधराज, खुमान, पद्‌माकार, भट्‌ट आदि ने जहां प्रबंधात्मक, वीरकाव्य काव्य की रचना की । वही भूषण, बांकीदास आदि ने मुक्तक वीर काव्य की रचना की ।
11. रीतिकाल की गौण प्रवर्तियां, भक्ति, वीरकाव्य, राज प्रसस्ति व नीति थी ।
12. रीतिकालीन देव ने फ्राइड की तरह, लेकिन फ्राइड के बहुत पहले ही 'काम' को समस्त जीवों की प्रक्रियाओं में केन्द्र में रखकर अपने समय में क्रांतिकारी चिंतन दिया ।

रीतिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचना	रचनाकार
1. कविकुल, कल्पतरू, रसविलास	चिन्तामणि
2. बिहारी सतसई	बिहारी
3. छत्रसाल दशक	भूषण
4. चण्डिचरित्र, रतन हजारा रसनिधि	गुरूगोविन्दसिंह
5. शब्द रसायन, काव्यरसायन	देव
6. हमीरासो	जोधराज

4. आधुनिक काल – (1850 – आजतक)

a) भारतेन्दु काल (1850-1900)

1. भारतेन्दु युग का नामकरण हिन्दी नव जागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिशचंद्र के नाम पर किया गया है।
2. भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख रचनाकार है ।अम्बिका दत्त व्यास, सुधाकर द्विवेदी आदि ।
3. भारतेन्दु मण्डल के रचनाकारों का मूल स्वर नवजागरण है। नव जागरण की पहेली अनुभूति हमें भारतेन्दु हरिशचंद्र की रचनाओं में रहती है।
4. भारतेन्दु हरिशचंद्र के पिता गोपाल चंद्र गिरधारी दास अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे ।

5. भारतेन्दु युगीन नव जागरण में एक ओर राजभक्ति तो दूसरी ओर देशभक्ति थी ।
6. भारतेन्दु युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत आदि को लेकर सहानुभूति पूर्ण कविताएं लिखी गयी ।
7. भारतेन्दु युग में मुक्तक कविताएं ज्यादा लोकप्रिय ।
8. भारतेन्दु ने उन मुक्तक काव्यों का उद्धारा किया । जिन्हें अमीर खुसरो के बाद लगभग भुला दिया गया था । ये है पहेलियां और मुकरियां ।
9. भारतेन्दु युग में पद्य के लिए ब्रज भाषा और गद्य के लिए खडी बोली को प्रयोग में लाया गया।

प्रमुख कवि :- भारतेन्द्र हरिशचंद्र
बालकृष्ण भट्ट
प्रताप नारायण मिश्र
चौधरी बदरी नारायण प्रेमधन

इस काल की महत्व पूर्ण विशेषता समस्या पूर्ति है।

भारतेन्दु युग की रचना एवं रचनाकार

रचना	रचनाकार
1. प्रेम सरोवर, प्रेम मल्लिका गोविन्द नन्द	भारतेन्दु हरिशचंद्र
2. मन की लहर, श्रृंगार विलास	प्रताप नारायण मिश्र
3. कंस वध, देश दशा	राधाकृष्ण दास

13. द्विवेदी युग(1900–1918)
1. इनका पूरा नाम महावीर प्रसाद द्विवेदी है।
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती पत्रिका' का सम्पादन किया ।
3. मैथली शरण गुप्त – भारत भारती इसी कृति के कारण इन्हें राष्ट्र कवि का दर्जा दिया गया है।
4. अयोध्या सिंह हरिऔध – 'प्रिश प्रवास' यही खडी बोली का पहला महाकाव्य है।
5. श्रीधर पाठक – ये स्वछन्दता चांद के कवि है।
6. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग में रखा गया है।
7. द्विवेदी युग को जागरण सुधार काल भी कहा जाता है।
8. इस युग के कवियों के दो वर्ग थे ।
   1. द्विवेदी मण्डल के कवि
   2. द्विवेदी मण्डल के बाहर के कवि
9. द्विवेदी मण्डल के कवियों की काव्य धारा को अनुशासन की धारा तथा द्विवेदी मण्डल के बाहर के विद्याओं की काव्यधारा को स्वछदता की धारा कहा जाता है।
10. द्विवेदी मण्डल के कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि आते है।
11. मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य साकेत व यशोधरा की रचना की ।
12. 'साहित्य समाज का दर्पण है।' यह कथन महावरी प्रसाद द्विवेदी जी का है।
13. मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि थे । इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'रंग में भंग जो 1909 में लिखी गयी है।

द्विवेदी युग के रचना और रचनाकार

रचना	रचनाकार
1. काव्य मंजूसा, सुमन, अवला द्विवेदी	विलाप महावीर प्रसाद
2. वैदेही वनवास, प्रिय-प्रवास	हरिऔध
3. पंचवटी, विष्णुप्रिय, द्वापार, जयद्रथंवध	मैथिलीशरण गुप्त

7. छायावाद काल (1918–1936)

जयशंकर प्रसाद – कामायनी, चंद्रगुप्त, कंकाल, स्कन्द गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – रामा की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता ।
मुंशी प्रेमचंद – गोदान, गवन, रंगभूमि, कर्मभूमि, मानसरोवर (कहानियों का संकलन)
महादेवी वर्मा – यामा, नीरजा
इन्हें आधुनिक मीरा कहा जाता है।
सुमित्रानंदन पंत – उच्छवास

1. प्रसाद, महादेवी, निराला पंत इन्हें छाया वाद के चार स्तम्भ कहा जाता है।
2. छाया वाद में नारी स्वतंत्रता को बल मिला है।
3. प्रेमचंद का अंतिम उपयान्स मंगलसूत्र था जो कि पूरा न हो सका ।

छायावाद का अर्थ मुकुटधर पाण्डे ने रहस्यवाद, सुशील कुमार ने अस्पष्टता, महावीर प्रसाद ने अन्योक्ति पद्धति, रामचंद्र शुक्ल ने शैली बैचित्य, नंद दुलारे वाजपेयी ने आध्यमिक छाया का भान, डॉ. नागेन्द्र ने स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह बताया है।

छायावादी काव्य की प्रमुख विशेताएं
1. सौन्दर्य तथा प्रणय भावनाओं का प्राधान्य
2. करूणा और वेदना की प्रवृत्ति।
3. भाषा में माधुर्य
4. प्रकृति का सजीव सत्य के रूप में चित्रण था प्रकृति पर कवि द्वारा अपने भावों का आरोपण ।
5. जयशंकर प्रसाद की प्रथम काव्य कृति 'उर्वशी' है।

6. प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति 'झरना' थी । और उनकी अंतिम काव्य कृति कमायनी (1935) सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है।
7. मनु, श्रृद्धा, इडा थे कमायनी के पात्र है।
8. पन्त की प्रथम छायावादी काव्य संग्रह उच्छ्वास और अंतिम छायावादी काव्य संग्रह गुन्जन है।
9. छायावाद में मुक्तक काव्य सर्वाधिक लोकप्रिय था ।
10. प्रसाद, महादेवी, निराला इन्हें छायावाद का तिलक स्तम्भ कहा जाता है।

छायावादी युग की रचना एवं रचनाकार

रचना	रचनाकार
1. युगान्त, युगवाणी, वीणा पल्लव	'पन्त'
2. हिमतरंगिणी,पुष्प की अभिलाषा	माखलाल चतुर्वेदी
3. त्रिधारा, वीरो का कैसा हो बसंत	सुभद्राकुमारी चौहान

प्रगति वाद (1936–1943)
नागार्जुन - हरिजन गाथा
रामधारी सिंह दिनकर- कुरूक्षेत्र, उर्वशी
प्रयोग वाद (1943–1951)

1. प्रगतिवाद का आरम्भ प्रगतिशील लेखक संघ द्वारा 1936 ई. में लखनऊ में आयोजित उस अधिवेशन में हुआ । जिसकी अध्यक्षता मुंशी प्रेमचंद ने की थी ।
2. प्रगतिवादी कविता में राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण से मुक्ति का स्वर प्रमुख है।

विशेषताएँ–

1. प्रकृति के प्रति लगाव, नारी प्रेम ।
2. राष्ट्रीयता।
3. रूढियों का विरोध, मार्क्सवादी विचारधारा का पल्लवन
4. बोधगम्य भाषा व व्यंग्यात्मकता 'कमेंट करना, जनता की भाषा ।
5. राजनीतिक में जो स्थान समाजवाद का है। वही स्थान साहित्य में प्रगतिवाद का है।

छायावाद और प्रगतिवाद में अंतर

1. छायावाद – छायावाद में कविता करने का उद्देश्य स्वान्तः सुखाय है।
   प्रगतिवाद जबकि प्रगतिवाद में बहुजन सुखाय बहुजन हिताय है।

2. छायावाद – छायावाद में अतिशय कल्पना शीलता है।
   प्रगतिवाद – जबकि प्रगतिवाद में ठोस यथार्थ है।
3. छायावाद- छायावाद में वैयक्तिक भावना प्रबल है।
   प्रगतिवाद – जबकि प्रगतिवाद में सामाजिक भावना प्रबल है।

प्रयोगवाद युग (1943–1951)

1. प्रयोगवाद उन कविताओं के लिए प्रमुख सम्बोधन बना । जो कतिपय नूतन बोधो, सम्वेदनाओं, शिल्पगत चमत्कारों को लेकर प्रारम्भ में तार सप्तक के माध्यम से सन् 943 में प्रकाश में आयी । इसके उन्नायक सच्चिदानंद हीरानन्द वात्सयानन 'अज्ञेय' स्वीकार किए गए । यह वर्ग अंग्रेजी के कवियों तथा टी.एस. इलियट, ऐजरा पाउण्ड, लॉरेन्स आदि से प्रभावित हुआ ।
2. प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी कवि होने के साथ साथ भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को विशेष रूप से ग्रहण करते है। कवि मध्यम वर्गीय व्यक्ति जीवन की समुचिकुण्ठा, पराजय, मानसिक संघर्ष तथा जडता को बडी बौद्धकता के साथ प्रकट करते है।
3. प्रयोगवादी काव्य महान संघर्षो तक जीवन प्रसंगों से न जुडकर व्यक्ति के अंत संघर्षो और मन की विविध स्थितियों के प्रति प्रतिबद्ध होकर छोटी, तीव्र तथा प्रभावशील कवियों का समूह बना ।
4. इसने लघु मानव के प्रति साहनुभूति का मार्ग अपना पाया ।

- प्रयोगवाद के अगुआ कवि अज्ञेय को प्रयोगवाद का प्रवर्तक कहा जाता है।
- इस तहर की कविताओं को सबसे पहले नन्ददुलारे वाजपेयी ने प्रयोगवादी कविता कहा ।

प्रयोगवाद के रचना एवं रचनाकार

1. रचना –शेखर एक जीवनी, असाध्य वीणा नदी के दीप (कविता)
   रचनाकार –'अज्ञेय' (सच्चिदानंद हीरानंद वाहयायन अज्ञेय)

नई कविता (1951–1960)

1. नयी कविता भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गई । उन कविता को कहा जाता है। जिनमें परम्परागत कविता से आगे नए भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों एवं नए शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया ।
2. 'अज्ञेय' को नयी कविता का भारतेन्दु कह सकते है।
3. आम तौर पर दूसरा सप्तक और तीसरा सप्तक के कवियों को नयी कविता के कवियों में शामिल किया जाता है।
4. नयी कविता के रचनाकारों पर दो वाद या विचार धाराओं का प्रभाव विशेष रूप से पडा
   1. अस्तित्ववाद 2. आधुनिकवाद

5. अस्तित्ववाद एक आधुनिक दर्शन है। जिसमें यह विश्वास किया जाता है। कि मनुष्य के अनुभव महत्वपूर्ण होते है। और प्रत्येक कार्य के लिए वह स्वयं उत्तरदायी होते है।
6. आधुनिकतावाद का संबंध पूंजीवाद विकास से है।

नवगीत – नयी कविता के समय जो गीत लिखे गये इनमें छायावाद के गीतों से तीव्र वैक्तिक्ता नहीं होती ।

लंबी कविता – लंबी कविता छायावाद में विकसित हुआ एक विशेष काव्यरूप है। दरअसल 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरूआत में गद्य का तीव्र विस्फोट हुआ और उसने कविता के सामने एक चुनौती प्रस्तुत की । विचार पर निबंध ने अपना दावा जताया । वर्णन पर उपन्यास और कहानी ने तो घटना व्यवहार पर नाटक ने की ।

विशेषताएँ –
1. नयी कविता जीवन के हर क्षण को सत्य ठहराती है।
2. नयी कविता की वाणी अपने परिवेश के जीवन अनुभव पर आधारित है।
3. नयी कविता मानव तत्व को स्वीकार करता है।
4. नयी कविता में जीवन मूल्यों की पुनः परीक्षा की गई है।

'यदि छायावादी कविता का नायक महामानव था, प्रगतिवादी कविता का नायक शोषित मानव तो नयी कविता का मानव लघु मानव है।'

अज्ञेय – नयी कविता
गजानन – मानव मुक्ति बोध –ब्रह्म राक्षस, अंधेरे में,
(जन्म श्योपुर म.प्र.) चांद का मुंह टेढा

11. समकालीन कविता (1960 – आजतक)

तारसप्तक – पहला तार सप्तक 1943 का है।
कवि – अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजा कुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, नेमीचंद्र जैन, राम विलास शर्मा ।

दूसरा तार सप्तक (1951)
कवि – रघुवीर सहाय
धर्मवीर भारती
भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, रामशेर बहादुर सिंह, शकुन्तला माथुर व हरिनारायण दास ।

तीसरा तार सप्तक (1959)
केदार नंद सिंह
विजय देव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सैना, कीर्ति चौधरी, प्रयोग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुंवर नारायण

चौथा तार सप्तक(1979)
सुमन राजे, राज कुमार कुम्भज

नोट – महत्वपूर्ण तथ्य

प्रमुख दर्शन या मत –

1. अद्वैतवाद	–	शंकराचार्य
2. द्वैतवाद	–	माधवाचार्य
3. विशिष्ट द्वैतवाद	–	रामानुजाचार्य
4. द्वैताद्वैतवाद	–	निम्बिकाचार्य
5. शुद्ध द्वैतावाद	–	बल्लभाचार्य

गुरू शिष्य परम्परा –

शिष्य		गुरू
1. शंकराचार्य	–	गोविन्द योगी
2. गोरखनाथ	–	मच्छदर नाथ
3. निम्बिकाचार्य	–	नारद मुनि
4. कबीरदास	–	रामानन्द
5. सूरदास	–	बल्लभाचार्य
6. मीराबाई	–	रैदास
7. तुलसीदास	–	बाबा नरहरिदास

मध्यप्रदेश की प्रमुख बोलिया

मध्यप्रदेश में बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ, मालवी, निमाडी और भीली, बोलियों के साथ ही कोरकू एवं गोंडी जैसी बोलिया बोली जाती है । अनुसूचित जनजाति वर्ग को कि अधिकांश बोलियाँ भी यहां अस्तित्व में है जो प्रमुख रूप से द्रविड भाषा परिवार की बोलियाँ है ।

किसी भी भाषा के दो रूप होते है राष्ट्र भाषा एवं लोक भाषा राष्ट भाषा राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है किंतु लोकभाषाएं शब्द के जड की अंदरूनी शक्ति होती है । इससे राष्ट्रभाषा निर्मित होती है लोग भाषा या बोली से मानवीय जीवन का निर्माण होता है । मध्य प्रदेश की प्रमुख बोलियां एवं उनके क्षेत्र निम्न प्रकार है-

1. **बुंदेली**- भारतीय आर्य भाषा परिवार के अंतर्गत शौरसेनी अपभ्रंश से जन्मी पश्चिमी हिंदी की एक प्रमुख बोली बुंदेली है । इसका नाम बुंदेलखंडी भी है । यह नामकरण जॉर्ज ग्रियर्सन ने किया था । मध्य प्रदेश के अन्य बोलियों की तुलना में बुंदेली का क्षेत्र सबसे अधिक व्यापक है ।

   इस बोली का विस्तार क्षेत्र उत्तरप्रदेश के झांसी, ललितपुर, जालौन जिला तथा हमीरपुर, आगरा, मैनपुरी इटावा एवं बांदा जिले के कुछ भाग में तो है ही महाराष्ट्र के नागपुर चांदा बुलढाणा भंडारा जिलों में अकोला के कुछ भागों तक फैला हुआ है ।

   मध्यप्रदेश के टीकमगढ, छतरपुर, पन्ना, दमोह, सागर, जबलपुर, नरसिंपुर सिवनी (लखनादौन तहसील एवं सिवनी तहसील का मध्यवर्ती भाग), छिंदवाडा (अमरवाडा और तहसील का पूर्वोत्तर एवं मध्य भाग) होशंगाबाद (होशंगाबाद तहसील सोहागपुर तहसील) बालाघाट जिले का (कुछ भाग) दुर्ग, बेतूल दक्षिण पश्चिम, भाग छोडकर रायसेन, सीहोर (आष्टा एवं सीहोर तहसील के पश्चिम भाग के अतिरिक्त विशेष जिला) भोपाल, विदिशा, गुना शिवपुरी, दतिया भिंड और मुरैना क्षेत्र जिलों की बोली बुंदेली है ।

   बुंदेली का सर्वाधिक परिनिष्ठित सुदूर प्रमाणिक रूप मध्यप्रदेश में टीकमगढ, सागर एवं नरसिंहपुर जिले की बोली में निहित है । बुंदेली के इस शुद्ध रूप से अतिरिक्त पवारी, लोंधाती और खटोला (उत्तरी ग्वालियर तथा दतिया में) है । हमीरपुर, (चरखी में एवं खटोला), पन्ना छतरपुर और दमोह जिलों के कुछ भाग जैसी बोलियां के ही स्थान भाग है । वस्तुतः पंवारी लौंधाती और खटोला को परिनिष्ठित बुंदेली से पृथक नहीं किया जा सकता है ।

   बुंदेली के कुछ मिश्रित रूप भी है जैसे उत्तर पूर्वी बुंदेलखंड और पश्चिमी बघेलखंड में बनाफरी, हमीरपुर में कुंडली, जालौन में निभट्टा, ग्वालियर, आगरा मैनपुरी और इटावा में भदावरी, बालाघाट में लौंडियां की बोली छिंदवाडा चाँदा और भंडारा की कोषटी बोली छिंदवाडा और बुलढाणा के कुमारों की बोली और नागपुर के हिंदी ।

   बुंदेली बोली साहित्य रचना की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है । भारतीय इतिहास के चंदेल शासकों से लेकर बुंदेली निरंतर विकसित होती रही है । बुंदेलखंड के नरेशों के ताम्रपत्रों सनंदो और पत्रों से स्पष्ट है कि बुंदेली यहां की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है । जगनिक, केशव, पद्माकर, लाल कवि गंगाधर व्यास और ईस्वी जैसे श्रेष्ठ कवियों ने बुंदेली को समृद्धि प्रदान की है ।

2. **बघेली**- अर्धमागधी अपभ्रंश से जन्मे पूर्वी हिंदी की एक महत्वपूर्ण बोली बघेली है । भाषाविदों का आग्र उसे अविध की एक बोली मानने का रहा है । लोकमत इसे एक स्वतंत्र बोली ही मानता है । 12 वीं शताब्दी में व्याघ्रदेव ने बघेल राज्य की नींव डाली थी, इसलिए यह क्षेत्र बघेलखंड और यहां बोली जाने वाली बोली का नामकरण बघेली हो गया

   बघेली बोली के उत्तर में अवधि, पूर्व में भोजपुरी, दक्षिण में छत्तीसगढी तथा पश्चिम में बुंदेली बोलियों का क्षेत्र है । विशुद्ध बघेली मध्य प्रदेश में रीवा, शहडोल, सतना और सिंधी जिलों में बोली जाती है । मिश्रित रूप से यह कटनी जिला और उत्तरप्रदेश के बांदा जिले के कुछ भाग में बोली जाती है । मंडला की जनजातीय बोली में बघेली, बुंदेली एवं मराठी का मिश्रण है ।

   बघेली की कुछ उप बोलियां भी है । फतेहपुर बांदा और हमीरपुर में यमुना नदी के आसपास बोली जाने वाली तिरहरि, बांदा जिले की केन और नगेन नदियों के मध्य प्रदेश की बोली गहोरा तथा रीवा और मंडला के गोंड बोली को बघेली की उप बोली मानने का लोगों का आग्रह रहा है ।

   बघेलखंड में साहित्य रचना की दृष्टि से बघेली को विशेष प्रोत्साहन नहीं मिला है । ठोकर रूप से साहित्य अवश्य रचा गया है । महाराज विश्वनाथ सिंह की "परम धर्म विजय और विश्वनाथ प्रकाश" जैसी रचनाओं के अतिरिक्त बघेली के कुछ लोकगीत और लोक कथाओं का संग्रह भी हुआ है ।

3. **मालवी**- शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हिंदी के राजस्थानी वर्ग की प्रमुख बोली मालवी है । डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा ने इसे दक्षिणी राजस्थानी भी कहा है । इंदौर-उज्जैन के आसपास का क्षेत्र मालवा नाम से जाना जाता है । इसलिए इस क्षेत्र की बोली का नाम मालवी है, इस बोली की सीमाएं पश्चिम में प्रतापगढ-रतलाम, दक्षिण-पश्चिम में इंदौर, दक्षिण-पूर्व में भोपाल, होशंगाबाद का पश्चिम विभाग, उत्तर-पूर्व में गुना, उत्तर-पश्चिम में नीमच और उत्तर और राजस्थान के कोटा, झालावाड, टोंक एवं चितौडगढ के कुछ भागों तक विस्तृत है ।

शुद्ध मालवी का क्षेत्र मध्यप्रदेश के देवास, इंदौर और उज्जैन जिले में है। जबकि होशंगाबाद बेतूल और छिंदवाडा जिलों में कुछ मालवी बोलने वाले रहते हैं।

मालवी के पूर्व में बुंदेली, दक्षिण में मराठी, दक्षिण-पश्चिम में गुजराती, खानदेशी और भीली तथा उत्तर-पश्चिम में मारवाडी बोली जाती है। मालवी मूल रूप से मारवाडी से संबंध है किंतु इसके शब्द भंडार पर बुंदेली गुजराती और मराठी का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इसकी सीमा पर पहाडी उमठवालडी रतलाम इत्यादि हैं। डॉक्टर कृष्ण लाल हंस का निष्कर्ष है कि ध्वनि तथा रूप की दृष्टि से माल भी पश्चिमी हिंदी के जितने समीप हैं उतने समीप राजस्थानी के नहीं हैं।

4. निमाडी- निमाडी बोली मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग के पूर्वी निमाड पश्चिमी निमाड और बडवानी जिले की बोली है। इसके उत्तर में मालवी दक्षिण और पश्चिम में मराठी तथा पूर्व में मालवी और बुंदेली का भू-भाग है। निमाडी का पश्चिमी सीमा पर भीली का क्षेत्र है। होशंगाबाद की हरदा तहसील की बोली निमाडी बुंदेली है।

निमाडी बोली शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है। डॉक्टर ग्रियर्सन इसे दक्षिणी राजस्थानी कहते हैं, जबकि डॉक्टर कृष्ण लाल हंस ने निमाडी को पश्चिमी हिंदी की एक बोली माना है। निमाडी बोली के कुछ उपरूप भी हैं जो वस्तु स्थानगत और जातिगत रूप हैं। इस दृष्टि से निवाडी के क्षेत्र में मालवी बोली का मिश्रण, उत्तर पूर्व में बुंदेली का मिश्रण, दक्षिणी सीमा पर खडी बोली का मिश्रण है।

5. ब्रजभाषा- ब्रजभाषा, खडी हिंदी की एक बोली है जो मुख्य रूप से भिंड, मुरैना, ग्वालियर में बोली जाती है। इस बोली में सूरदास, मीरा, रसखान जैसे कवियों ने बडे पैमाने पर साहित्य का सृजन किया है।
6. भीली- यह बोली प्रदेश के रतलाम धार झाबुआ, खरगोन एवं अलीराजपुर जिले में रहने वाली भील जनजाति के द्वारा बोली जाती है।
7. गोंडी- गोंडी बोली प्रदेश में छिंदवाडा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी एवं होशंगाबाद जिले में रहने वाली गोंड जनजाति के द्वारा बोली जाती है।
8. कोरकू- यह बोली बैतूल, होशंगाबाद, छिंदवाडा, खरगोन जिलों के कोरकू आदिवासी द्वारा बोली जाती है। इस बोली में लोकगीतों एवं लोक कथाओं के रूप में फुटकर साहित्य रचा गया है।

मध्यप्रदेश की प्रमुख बोलियां एवं उनके क्षेत्र

- बुंदेलीखंडी- दतिया, गुना, शिवपुरी, मुरैना, सागर, छतरपुर, दमोह, पन्ना, विदिशा, रायेन, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, सिवनी, छिंदवाडा, भोपाल, बालाघाट, आदि।
- निमाडी- खंडवा, खरगोन, धार, देवास, बडबानी, झाबुआ, इंदौर।
- बघेलीखंडी- रीवा, सतना, शहडोल एवं उमरिया।
- मालवी- सीहोर, नीमच, रतलाम, मंदसौर, शाजापुर, झाबुआ, उज्जैन, देवास, इंदौर आदि।
- ब्रजभाषा- भिंड, मुरैना, ग्वालियर आदि।
- कोरकू- बैतूल, होशंगाबाद, छिंदवाडा, खरगोन आदि।
- भीली- रतलाम, धार, झाबुआ, खरगोन एवं अलीराजपुर
- गोडी- छिंदवाडा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, होशंगाबाद।